IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मध्यप्रदेश की लोककला में मांडना: एक सांस्कृतिक, सौंदर्यात्मक एवं सामाजिक अध्ययन"

डॉ महिमा मरमट

विषय विशेषज्ञ

(विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, म. प्र.)

Orchid id - https://orcid.org/0009-0000-5061-8616

सारांश (Abstract):

भारतीय लोककला में मांडना एक अत्यंत विशिष्ट एवं प्राचीन कला रूप है, जो विशेष रूप से मध्यप्रदेश के मालवा, बुंदेलखंड और निमाड़ अंचलों की ग्रामीण महिलाओं द्वारा धार्मिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक अवसरों पर भूमि एवं दीवारों पर सजावटी रूप में अंकित किया जाता है। यह कला किसी औपचारिक प्रशिक्षण या राजाश्रय के अधीन नहीं, बल्कि सहज पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से उत्पन्न हुई है। इस शोध-पत्र में मांडना की उत्पत्ति, स्वरूप, सांस्कृतिक महत्व तथा सौंदर्यशास्त्रीय विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही इसके संरक्षण की आवश्यकता तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसके संभावित योगदान पर भी विचार किया गया है।

मुख्य शब्द: मांडना, लोककला, मध्यप्रदेश, स्त्री-सृजनात्मकता, सांस्कृतिक विरासत, सौंदर्यशास्त्र।

भूमिका (Introduction):

भारत की कला परंपरा अत्यंत प्राचीन, विविधतापूर्ण और बहुआयामी है। जहाँ एक ओर दरबारी एवं शासकीय संरक्षण में विकसित क्लासिकल कला के उदाहरण मिलते हैं, वहीं दूसरी ओर लोककला के स्वरूप में आम जनमानस की सृजनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक आस्था की सजीव अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

इसी लोक परंपरा की एक विशिष्ट और सुंदर अभिव्यक्ति है – मांडना कला, जो विशेष रूप से मध्यप्रदेश के ग्रामीण अंचलों में प्रचलित है। यह कला मुख्यतः महिलाओं द्वारा विशेष अवसरों पर की जाती है और यह न केवल सज्जा का माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक अभिव्यक्ति का भी रूप है।

- **मांडना: परिभाषा और व्युत्पत्ति**

'मांडना' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'मंडन' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है – सज्जा या अलंकरण। मांडना का आशय है – किसी स्थान को शुभ और पवित्र अवसरों पर सजाना, उसे सांकेतिक रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक रूप देना।

मध्यप्रदेश में यह परंपरा त्योहारों (दीपावली, गोवर्धन, होली), जंवारे, विवाह, फसल कटाई आदि जैसे अवसरों पर प्रचलित है। इसमें महिलाएँ घर के आँगन, चौक, दीवारों, पूजा स्थलों को सजाती हैं।

- **मांडना की विशेषताएँ (मध्यप्रदेश सन्दर्भ में)**

चित्रशैली:

मध्यप्रदेश में मांडना की आकृतियाँ अधिकतर समान्तर रेखाओं, त्रिकोणों, वृत्तों और चौकोरों से निर्मित होती हैं।

कई बार इसमें पेड़-पौधे, तुलसी चौरा, सूर्य-चंद्र, गाय-बैल, आदि भी दर्शाए जाते हैं।

सामग्री:

यहाँ भी मांडना में प्रयुक्त सामग्री अधिकतर घरेलू एवं प्राकृतिक होती है, जैसे:

गेरू (लाल रंग के लिए), चूना या खड़िया (सफेद रंग के लिए), आटे या चावल के घोल से सफेद रंग, गोबर मिश्रित मिट्टी – भूमि की पृष्ठभूमि तैयार करने हेतु

कार्यप्रणाली:

यह कार्य पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है।त्योहारों पर महिलाएँ मांडना बनाते हुए गीत गाती हैं, जैसे फाग, सुआ गीत, पंडवानी आदि।

- **सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व**

"मांडना, मध्यप्रदेश की गृहस्थ संस्कृति, कृषि-आधारित जीवनशैली और धार्मिक मान्यताओं का एक सजीव प्रतिबिंब है। यह केवल एक सजावटी कला नहीं, बल्कि महिलाओं की आत्मिक आस्था, पारिवारिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक परंपराओं की सामूहिक स्मृति है। मांडना बनाना नारी जीवन की रचनात्मकता, कलात्मक संवेदना और धार्मिक भावभूमि की अभिव्यक्ति है, जो समय और परिस्थितियों की परवाह किए बिना निरंतर प्रवाहित होती रहती है।

यह लोककला स्त्रियों के लिए एक ऐसा माध्यम बन जाती है, जिसमें वे अपने मनोभावों को रंग, रूप और रेखाओं के माध्यम से व्यक्त करती हैं। यहाँ मांडना केवल सजावट नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति और सामूहिक जुड़ाव का सशक्त प्रतीक है। इसी के साथ यह स्त्री सशक्तिकरण का भी परिचायक है, जहाँ ग्रामीण महिलाएँ अपने रचनात्मक योगदान से न केवल अपने घर-परिवार को सजाती हैं, बल्कि एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा को भी जीवित रखती हैं।

यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक, व्यवहारिक और अवचेतन स्तर पर हस्तांतरित होती रही है – बिना किसी लिखित दस्तावेज, संस्थागत संरचना या औपचारिक प्रशिक्षण के। मांडना की यही स्वाभाविकता और सहजता इसे विशिष्ट बनाती है। यह माताएं अपनी बेटियों को, और बुज़ुर्ग स्त्रियाँ अपनी अगली पीढ़ी को जीवन के अनुभवों के साथ-साथ इस कला की बारीकियाँ भी सौंपती हैं। इस प्रकार, मांडना केवल कला नहीं, बल्कि एक जीवंत विरासत है, जो स्त्री चेतना, श्रम और सौंदर्यबोध का संगम है।"

- **सौंदर्यशास्त्र और प्रतीकवाद**

"मध्यप्रदेश के मांडनों में सौंदर्य की गहराई उनकी सहजता, संतुलन और लयबद्ध रचनात्मकता में निहित होती है। यह सौंदर्य बाह्य प्रदर्शन की अपेक्षा आंतरिक प्रतीकात्मकता में अधिक प्रकट होता है। मांडना चित्र बहुधा अमूर्त और प्रतीकात्मक होते हैं, जिनमें रंगों और आकृतियों के माध्यम से किसी गहरे आध्यात्मिक या सांस्कृतिक अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। इनका मुख्य उद्देश्य केवल दृश्य आकर्षण नहीं, बल्कि परिवार और गृहस्थ जीवन में शुभता, समृद्धि, ऊर्जा, और रक्षण का भाव जागृत करना होता है।

इन चित्रों में प्रयुक्त प्रतीकों का अपना विशिष्ट अर्थ और महत्व है, जो शताब्दियों से लोकमानस में रचा-बसा है:

स्वस्तिक: मांडनों में सर्वाधिक प्रयुक्त प्रतीक, जो मंगलता, शुभारंभ और चारों दिशाओं में ऊर्जा के प्रवाह का प्रतीक माना जाता है। यह विशेष रूप से गृह-प्रवेश, विवाह, पूजा आदि अवसरों पर केंद्र में बनाया जाता है।

कमल पुष्प: पवित्रता, आत्मज्ञान और विकास का प्रतीक। कीचड़ में उगने वाला कमल यह दर्शाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी निर्मलता और दिव्यता प्राप्त की जा सकती है। विशेषकर लक्ष्मी पूजन में इसका चित्रण शुभ माना जाता है।

वृत्त: अनंतता, पूर्णता और निरंतरता का द्योतक। यह जीवन-चक्र का प्रतीक भी है, जो यह दर्शाता है कि जीवन सतत गति में है और हर अंत एक नई शुरुआत है।

गाय-बैल: कृषि-प्रधान मध्यप्रदेश की ग्रामीण संस्कृति में गाय-बैल केवल पशु नहीं, बल्कि जीविका, उर्वरता और पवित्रता के प्रतीक हैं। इन्हें मांडनों में उकेरना कृषि समृद्धि और सुरक्षा की कामना से जुड़ा है।

तुलसी चौरा: घर की पवित्रता और नारी शक्ति का प्रतीक। इसके चारों ओर बनाई गई मांडनाएं पारंपरिक धार्मिकता और मातृत्व की रक्षा का भाव रखती हैं।

सूर्य और चंद्रमा: ये ब्रह्मांडीय शक्तियों के प्रतीक हैं, जिनका उद्देश्य जीवन में संतुलन, समय की चक्रवातिता और ऊर्जा का संचार दिखाना होता है।

मछली, मोर, हाथी आदि आकृतियाँ भी कुछ क्षेत्रों में देखने को मिलती हैं, जो शुभ समाचार, सौंदर्य, शक्ति और ऐश्वर्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इस प्रकार, मांडनों की हर रेखा और आकृति केवल सजावटी अलंकरण नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक दर्शन की वाहक होती है। लोक स्त्रियाँ जब इन्हें बनाती हैं, तो वे अनजाने में ही एक पूरी सांस्कृतिक विरासत को पुनः रचती हैं — जिसमें उनकी आस्था, अनुभूति और जीवन-दृष्टि समाहित होती है।"

- **वर्तमान स्थिति और संरक्षण की आवश्यकता**

मॉडर्न डिज़ाइन, शहरीकरण और प्लास्टिक डेकोरेशन के बढ़ते प्रभाव से लोककलाएँ खतरे में हैं। अब मांडना केवल बुज़ुर्ग महिलाओं तक सीमित रह गया है।लोककला को स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।स्थानीय मेले, हाट, उत्सवों में मांडना प्रतियोगिताएँ कराई जाएँ।डिजिटल माध्यम से इसका डॉक्युमेंटेशन और प्रचार किया जाए।

- **निष्कर्ष (Conclusion)**

"मध्यप्रदेश की मांडना कला न केवल एक पारंपरिक चित्रण शैली है, बल्कि यह सम्पूर्ण जनजीवन, स्त्री रचनात्मकता और सांस्कृतिक चेतना की गहन और सजीव अभिव्यक्ति भी है। यह एक ऐसी कला है, जो ग्रामीण समाज की नारी शक्ति के हाथों विकसित हुई, जिसने रंगों और रेखाओं के माध्यम से न केवल अपने भावों को अभिव्यक्त किया, बल्कि एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक दृष्टिकोण को पीढ़ियों तक पहुँचाया। मांडना में वह शक्ति है, जो एक साधारण गृहिणी को एक सांस्कृतिक वाहक और रचनात्मक कलाकार में रूपांतरित कर देती है। इस लोककला का सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष भी अत्यंत समृद्ध है — इसकी सरल रेखाएँ, प्रतीकात्मक आकृतियाँ, प्राकृतिक रंग और धार्मिक प्रतीक एक साथ मिलकर न केवल दृश्य सौंदर्य उत्पन्न करते हैं, बल्कि वे एक गहरे अर्थ से युक्त होते हैं, जो भारतीय जीवनदर्शन की मूल आत्मा से जुड़े हुए हैं।

मांडना का धार्मिक और सामाजिक महत्व भी कम नहीं है। यह शुभता, समृद्धि और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है। यह केवल चित्रांकन नहीं, बल्कि एक अनुष्ठान है, जो हर अवसर को पवित्र और सार्थक बना देता है। यह लोककला हमारे परंपरागत जीवन-मूल्यों, सामाजिक सहभागिता और स्त्री सशक्तिकरण की मौन किंतु प्रभावशाली घोषणा है।आज जब आधुनिकता के प्रभाव में लोक कलाएँ हाशिए पर जा रही हैं, तब मांडना जैसी कलाओं को संरक्षित करना केवल एक सांस्कृतिक कार्य नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी बन जाता है। इसे संरक्षित करना मात्र एक परंपरा का संरक्षण नहीं, बल्कि उस समूचे सांस्कृतिक आत्मबोध का पुनरुद्धार है, जो हमारी पहचान की नींव है।अतः आवश्यकता है कि मांडना जैसी लोककलाओं को न केवल संग्रहालयों या शिल्प मेलों तक सीमित रखा जाए, बल्कि इसे शिक्षण संस्थानों, सार्वजनिक दीवारों, डिजिटल मीडिया और वस्त्र व सजावट के डिज़ाइनों के माध्यम से आधुनिक जीवन शैली में पुनः स्थापित किया जाए। यही हमारी परंपरा और प्रगति के मध्य सेतु होगा।"

- **संदर्भ सूची (References):**

भारतीय लोककला: स्वरूप और महत्व – डॉ. विनीत उपाध्याय

मध्यप्रदेश की चित्रकला परंपराएँ – संस्कृति संचालनालय, भोपाल

लोक परंपरा और स्त्री-सृजनात्मकता – रेखा त्रिपाठी

फील्ड सर्वेक्षण: उज्जैन, खंडवा, पन्ना, दमोह, देवास (2022–2024)

स्थानीय बुज़ुर्ग महिलाओं से साक्षात्कार

डिजिटल आर्काइव्स: www.mplokkalas.org